पद २१

(राग: मुलतानी जिल्हा - ताल: दीपचंदी)

ध्या त्या माणिकप्रभुच्या पाया। चित्त भ्रमवूं नका तुम्ही वाया।।ध्रु.।। द्विजसुताची पाहुनी भक्ति। ग्रंथरूपें सांगुनी निज युक्ति। लावुनियां स्वीय पदाऽऽसक्ति। दिधली हो तयालागिं मुक्ति।।१।। अबला एक वैश्यजा। चित्तीं चिंतूनियां मोक्षकाजा। शरण आली सद्गुरु महाराजा। मोक्ष दिधला काढुनी अहंलज्जा।।२।। शूद्रका इतुका बहुवेळा। काहीं नेणें एक भाव रोकडा। तयावरि आला स्नेहओढा। दिधलें अखंड स्थान सोडुनि भववेडा।।३।। द्विजकन्येच्या भावबळें। कपर्दिकेसी पुत्र दिले। बहुतां मृत्युभय चुकविलें। मनोहर म्हणे वानितां वेद थकले।।४।।